ISSN : 2583-2948

तुम्हारे बगैर लड़ना

विहाग वैभव
(युवा कवि)

तुम्हारे जाने के बाद

मैं राह के पत्थर जितना अकेला रहा

फिर एकदिन सिसकियों को एक खाली कैसेट में डालकर

किताबों को बीच छिपा दिया

बहुत से लोग थे जिन्हें फूलों की जरूरत थी

मैंने माली का काम किया

किसी कमजोर के खेत का पानी

किसी ने लाठी के दम पर काट लिया

दोस्तों को जुटाया

हड्डियों को चूम लेने वाली सर्दियों में

घुटने तक पानी में खड़ा रहा

न्याय के लिए विवेक भर अड़ा रहा

(एक गेहूँ उगाने के लिए खोलने होते हैं कितने मोर्चे

कितना आसान है

ख़ारिज कर देना एक वाक्य में पूरा का पूरा जीवन)

किसी की खुशी में शामिल हुआ

तो भूल गया कि

समय का पत्थर बरसाती बिजलियों की तरह

सीने में चिटकता है इन दिनों

ISSN : 2583-2948

तुम्हारे जाने के बाद भी हिम्मत भर लड़ा

और थका तो सपने में जाकर रोया

पर मेरी तुम!

काश आज तुम मुझे सुन लेतीं

हत्यारों में किया गया हूँ शामिल

आतताइयों का दोस्त बताकर किया गया है अट्टहास

पीठ पर बढ़ते जाते हैं अभिव्यक्तियों के घाव

मैं वहाँ हूँ जहाँ से इंसान का दायाँ हाथ

अपने ही बाएँ हाथ को पहचानने से इनकार करता है

काश आज तुम मुझे सुन लेतीं

काश मैं तुम्हें छू सकता

जैसे इस दुनिया से बचाती हुई

अपने सीने में मुझे छिपाती हुई

तुम कह देतीं-

नहीं, तुम्हारी गर्दन तुम्हारी आवाज की कीमत नहीं चुकायेगी

तुम्हारा 'जन्म एक भयंकर हादसा' नहीं था।